International Conference on Social Science & Humanities Trends
International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
April 2025
ISSN: 2584-2455

कृष्ण भक्ति काव्य में वात्सल्य और प्रेम का स्वरूप : सूरदास के काव्य के विशेष संदर्भ में

डॉक्टर अंशु सत्यार्थी

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी
राजकीय महाविद्यालय फरीदपुर, बरेली
ईमेल : **msubhash28@rediffmail.com**

शोध सार

हमारे भक्ति साहित्य में कृष्ण भक्ति काव्य की परंपरा बहुत समृद्ध और प्रभावशाली है। इस परंपरा में बहुत से कवियों ने भगवान श्री कृष्ण के विभिन्न रूपों और बाल लीलाओं का सजीव चित्रण किया है। भगवान और भक्ति का संबंध का मानवीय और भावात्मक रूप ही कृष्ण भक्ति के काव्य की प्रमुख विशेषता रही है। कृष्ण भक्ति में वात्सल्य और प्रेम के विविध रूप दृष्टिगत होते हैं। भक्ति काल के श्रेष्ठतम कवि महात्मा सूरदास ने अपने काव्य में वात्सल्य और प्रेम जैसे भावों का अत्यंत मार्मिक और मनमोहन चित्रण किया है। सूर का काव्य बालकृष्ण और मां यशोदा के संबंधों से वात्सल्य भाव की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति को दर्शाता है वहीं दूसरी ओर गोपिकाओं और कृष्ण के सुमधुर संबंधों के द्वारा प्रेम के भाव की गहनता को भी प्रकट करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में कृष्ण भक्ति काव्य की परंपरा का संक्षिप्त विवरण देकर सूरदास के काव्य में वर्णित वात्सल्य और प्रेम के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। इसके अध्ययन से यह स्पष्ट होगा कि सूरदास का काव्य केवल धार्मिक अनुभूति तक ही सीमित नहीं है अपितु यह भारतीय संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं के गहरे प्रतिकों भी अपने में समेटे हुए है।

मुख्य शब्द :- कृष्ण भक्ति, प्रेम, सूरदास, ब्रज संस्कृति, वात्सल्य] गोपीकाएं।

प्रस्तावना :-

मध्यकाल के हिंदी साहित्य में भक्ति आंदोलन ने हमारे समाज और संस्कृति को नई दिशा प्रदान की है। इसी समय विभिन्न संतों और भक्त कवियों यथा - कबीर] नानक] रविदास] तुलसी और रसखान तथा मीरा आदि ने अपने-अपने ढंग से ईश्वर के प्रति अपने प्रेम और समर्पण की भावना को काव्य में पिरोया है। भक्ति आंदोलन का वास्तविक लक्ष्य ही ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध स्थापित करना था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भक्ति काल को सरलता से समझने के लिए इसे दो शाखाओं में विभक्त किया और उन्हें पुनः दो उप धाराओं में बांट दिया।

जो इस प्रकार हैं-

भक्ति काल-

1 -निर्गुण भक्ति **2**- सगुण भक्ति

निर्गुण भक्ति से दो धाराएं विकसित हुई- ज्ञानमार्गी शाखा (संत परंपरा में) और प्रेम मार्ग शाखा (सूफी परंपरा में) इसके इतर सगुण भक्ति में भी दो अन्य धाराएं विकसित हुई- राम भक्ति और कृष्ण भक्ति।

कृष्ण भक्ति के काव्य में श्री कृष्ण को अपना आराध्य मानकर विभिन्न कवियों जैसे- सूरदास] मीराबाई] रसखान] नंददास और हित हरिवंश आदि ने अपने-अपने मनोभावों से उनकी आराधना की। कृष्ण भक्ति की इस धारा में मुख्य रूप से श्री कृष्ण के बाल] किशोर] सखा और रसिक रूप का सजीव और सुंदर चित्रण मिलता है। कृष्ण भक्ति की शाखा में भक्ति केवल आध्यात्मिक रूप तक ही सीमित नहीं रही बल्कि यह भावनात्मक और मानवीय रूप में भी दृष्टिगत होती है। सूरदास जी भक्ति काल के श्रेष्ठतम कवि हैं। सूर ने अपने काव्य में जितनी सहजता से कृष्ण की बाल लीला] वात्सल्य माधुर्य] गोपियों की विरह वेदना तथा ब्रज संस्कृति का जैसा सुंदर-मधुर और मनमोहन वर्णन किया है वह बेजोड़ और अद्वितीय है तथा अन्यत्र दुर्लभ भी।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार- " आचार्यों की छाप लगी आठ वीणाएं श्री कृष्ण की प्रेम लीला का कीर्तन करने उठी] जिसमें सबसे ऊंची] सुरीली और मधुर झंकार अंधे कवि सूरदास की वीणा की थी। " **1**

कृष्ण भक्ति काव्य की परंपरा:-

कृष्ण काव्य में श्री कृष्ण का स्वरूप अत्यंत विलक्षण है। उनको पारब्रह्म] परमेश्वर अद्वैत मानकर अपने-अपने भावों के अनुसार कवियों और संतों ने उनके वात्सल्य] सख्य और माधुर्य रूप को चित्रित किया है। भक्ति आंदोलन के अनुसार कृष्ण भक्ति काव्य का विकास अचानक नहीं हुआ। कृष्ण को वैदिक कालीन परंपरा का देवता माना जाता है और जिनका विकास साहित्य में महाभारत काल तक निरंतर हुआ है।

डॉ.रामकुमार वर्मा के अनुसार - " श्री कृष्ण की भावना का आविर्भाव ईसा की चौथी शताब्दी पूर्व हो चुका था। श्री कृष्ण के अनेक नामों में 'वासुदेव' नाम भी था। " **2**

हापकिंस का कथन है कि- " महाभारत में श्री कृष्ण केवल मनुष्य के रूप में ही आते हैं] बाद में देवताओं के पद पर अधिष्ठित हुए। " **3**

कृष्ण को वैदिक ऋषि मानकर भी काव्य लिखे गए। कृष्ण के विभिन्न रूपों को ध्यान में रखकर गीता] महाभारत और पुराणों की रचना हुई। संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश काव्य में भी कृष्ण के विविध रूपों का वर्णन भी साहित्य मिलता है। हिंदी कृष्ण भक्ति परंपरा में कृष्ण कहीं पर नटखट नटवर नागर है तो कहीं पर मधुर मनमोहन] कहीं पर आकर्षक कान्हा हैं तो कहीं पर योगेश्वर। गीता में कृष्ण परम देवत्व का रूप लिए हुए हैं और महाभारत में प्रारंभ में कृष्ण साधारण नर और बाद में ब्रह्म स्वरूप हो जाते हैं।

रामकुमार वर्मा के अनुसार- " वासुदेव का प्रथम रूप नारायण था बाद में विष्णु और में गोपाल कृष्ण। " **4**

अत: कहा जा सकता है कि कृष्ण भक्ति काव्य की जड़ें भारतीय धार्मिक परंपरा में अत्यंत गहरी हैं और इन धार्मिक परंपराओं का विकास संभवत वैष्णव भक्ति आंदोलन के माध्यम से हुआ है। इस प्रकार कृष्ण भक्ति काव्य में श्री कृष्ण के विभिन्न रूपों का सुंदर मानवीय चित्रण मिलता है-

- बाल रूप
- किशोर रूप
- रासलीला का रूप

इन सभी भावों में प्रेम की प्रधानता स्पष्ट दिखाई देती है। भक्त और भगवान के संबंध को दास्य भाव] सख्य भाव] वात्सल्य और माधुर्य भाव के माध्यम से साहित्य में व्यक्त किया गया है।

सूरदास : जीवन एवं साहित्यिक अवदान:-

वात्सल्य और प्रेम का बेजोड़ वर्णन करने वाले भक्तिकालीन कवि सूरदास के जन्म के विषय में विद्वानों में बहुत मतभेद है] लेकिन सामान्यतः उनका जन्म **1478** ई के आसपास वर्तमान हरियाणा क्षेत्र के ग्राम सीही में माना जाता है। मान्यता यह भी है कि सूरदास जन्मांध थे और वाल्यकाल से ही उनका लगाव संगीत तथा भक्ति में था। वैष्णव परंपरा के आसार वल्लभाचार्य इनके गुरु थे। उन्हीं के मार्गदर्शन से सूर ने कृष्ण भक्ति को अपना जीवन आधार बनाया।

महाकवि सूरदास की प्रमुख रचना **Z**सूरसागर मानी जाती है। जो लगभग सवा लाख पदों का संग्रह ग्रंथ है] लेकिन उसके अभी तक सात - आठ हजार पद ही उपलब्ध हो पाए हैं। इसके अतिरिक्त और सूरसरावली] साहित्य लहरी] नलदमयंती तथा ब्याहलो उनकी अन्य प्रमुख रचनाएं हैं। सूरदास की भाषा ब्रजभाषा है] जो अत्यंत सरस और भावपूर्ण है। उनके काव्य में प्रेम की अपार व्यापकता के साथ-साथ वात्सल्य] करुणा और भक्ति का अद्भुत समन्वय देखते ही बनता है।

सूरदास के काव्य में वात्सल्य का स्वरूप:-

भारतीय काव्यशास्त्र में वात्सल्य भाव का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। वात्सल्य अर्थात वत्सल भाव का अर्थ है- " प्रेम] दया और करुणा। " **5**

" वात्सल्य भावमूलक भक्ति सर्वथा विशुद्ध होती है] उसमें भगवान के रूप के प्रति मातृ-पितृ-रति का मूल भाव रहता है। वात्सल्य भाव के आश्रय में आलम्बन रूप भगवान के महत्व की चेतना का तिरोभाव रहता है] किंतु शिशु रूप भगवान का रक्षक एवं पालक होने का भाव प्रमुख रूप से विद्यमान रहता है। " **6**

कृष्ण भक्ति के काव्य में वात्सल्य भाव का आधार भगवान श्री कृष्ण का बाल स्वरूप है। बालकृष्ण की चंचलता] चपलता और माता यशोदा का स्नेह वात्सल्य भाव की मुख्य अभिव्यक्ति है। वात्सल्य रस की सुंदर मनमोहक एवं आकर्षक अभिव्यक्ति के कारण ही सूरदास को वात्सल्य हृदय का सम्राट भी कहा जाता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार- " श्रृंगार और वात्सल्य के क्षेत्र में जहां तक इनकी दृष्टि पहुची वहां तक और किसी कवि की नहीं। इन दोनों क्षेत्रों में तो इस महाकवि ने मानों औरों के लिए कुछ छोड़ा ही नहीं। " **7**

सूर के पदों में कृष्ण का तुतलाना] धूल में खेलना] गिरना] उठना] रेंगना] मुस्कुराना] किलकना तथा हुलसना आदि बाल लीलाओं का सजीव चित्रण देखते ही बनता है।

सूर ने काव्य में माता यशोदा] नंद बाबा तथा ब्रज की गोपिकाओं के माध्यम से श्रृंगारिक प्रेम] वात्सल्य प्रेम] राधा-कृष्ण प्रेम] गोपी प्रेम तथा साख्य प्रेम का सुंदर और आकर्षक स्वरूप दर्शाया है -

" ललन हौं या छवि ऊपर वारी।

बाल गोपाल लगौ इन नैननि] रोग-बलाइ तुम्हारी।।
लट लटकनि] मोहन मसि-बिंदुका तिलक भाल सुखकारी।
मनौ कमल-दल सावक पेखत] उड़द मधुप छबि न्यारी। " 8

कृष्ण की सुंदर बाल छवि का वर्णन कर सूरदास जी कहते हैं कि- श्री कृष्णा अपने नंद बाबा के आंगन में कुछ गाते हुए खेल रहे हैं। वात्सल्य की ऐसी मनमोहन अभिव्यक्ति दर्शनीय है-

" हरि अपने ऑंगन कछु गावत।
तनक-तनक चरननि सों नाचत] मनहीं मनहिं रिझावत।
बाहँ उठाई काजरी-धौरी गैयनि टेरि बुलावत।
कबहुक बाबा नंद पुकारत] कबहुक घर मैं आवत।। " 9

मां की ममता तथा अभिलाषा का मार्मिक चित्रण यशोदा के माध्यम से सूरदास जी ने बहुत खूबसूरती से किया है-

" जसुमति मन अभिलाष करै।
कब मेरौ लाल घुटरुवनि रेंगे कब धरती पग द्वैक धरै।
कब द्वै दांत दूध के देखौं] कब तोतरैं मुख बचन झरै।
कब नंदहिं बाबा कहि बोलै कब जननी कहि मोहिं ररै। " 10

कृष्ण जब कुछ बड़े हो गए और तुतला कर बोलना प्रारंभ किया। तब नंद-यशोदा उनकी तोतली वाणी पर खुशियों से गदगद होकर बलैंया ले रहे हैं। सुंदर अभिव्यक्ति देखिए-

" कहन लागे मोहन मैया मैया।
नंद महर सौं बाबा-बाबा] अरु हलधर सौं भैया।
ऊंचे चढ़ि चढ़ि कहती जसोदा] लै लै नाम कन्हैया।
दरि खेलन जनि जाह लला रे] मारैगी काहु की गैया।
गोपी ग्वाल करत कौतूहल] घर घर बजति बधैया।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस कौं] चरननी की बलि छैया।। " 11

यशोदा के गोद में कन्हैया की सुंदर छवि को चित्रित करते हुए सूरदास जी लिखते हैं कि-

" हरि किलकत जसुदा की कनियाँ।
निरखि निरखि मुख कहति लाल सौं] मो निर्धन के धनियाँ। " 12

माता यशोदा जब कन्हैया को दूध पीने को कहती हैं] तो वह मना कर देते हैं। फिर माता कहती हैं कि दूध पीने से आपकी चोटी बड़ी हो जाएगी। तब कृष्ण दूध पीते हुए अपनी मां से शिकायत करते हैं कि यह चोटी अभी तक बड़ी क्यों नहीं हुई। उनकी मधुर और मनमोहक बातें चित्त को आकर्षित करती हैं-

" मैया कबहिं बढ़ेगी चोटी।
किती बार मोहि दूध पीवत भइ] यह अजहूं है छोटी।
तू जो कहति बलि की बेनी ज्यौं] हहैं लांबी मोटी।
कांचो दूध पियावति पचि पचि] देते न माखन रोटी।। " 13

कन्हैया माता से चांद रूपी खिलौना लेना चाहते हैं और उनसे कहते हैं कि यदि चांद नहीं मिला तो अभी जमीन पर लोट जाऊंगा] तुम्हारी गोद में नहीं आऊंगा और तुम्हारा पुत्र भी आज से नहीं रहूंगा। इस पद में वात्सल्य रस की सुंदर अभिव्यक्ति देखिए-

" मैया मैं तो चंद खिलौना लैहों।
जैहों हो लोटि धरनि पर अबहीं] तेरी गोद न ऐहौं। " 14

वात्सल्य के वियोग पक्ष में जब कृष्ण मथुरा में प्रवास कर जाते हैं तब उनके वियोग में यशोदा उद्धव के द्वारा देवकी को संदेश भिजवातीं हैं और कहती हैं कि–

" सदेसों देवकी सौं कहियो।
हौं तो धाय तिहारे सुतकी] कृपा करत ही रहियो। " 15

अर्थात मैं तो केवल आपके पुत्र की धाय मां हूं। वास्तविक माता तो आप ही हैं] लेकिन फिर भी मेरे कन्हैया का ध्यान रखना। कृष्ण के वियोग में मां यशोदा सोचती हैं कि कन्हैया हमसे न जाने क्यों नाराज हो गए हैं \ मैं अब कभी भी उनसे गाय चराने को नहीं कहूंगी। माखन चोरी पर भी श्याम को डांटूंगी नहीं। हे–उद्धव कन्हैया से कह देना कि मेरे जीवन में एक बार आकर के मुझे अपनी छवि जरूर दिखा दें। वात्सल्य रस का मार्मिक पद देखिए–

" करत अन्यावन न बरजौं कवहू अरु माखन की चोरी।
अपने जियत नैन भरि देखौं हरि हलधर की जोरी।
दिवस चारि मिलि जाहु सांवरे कहियौ यहै संदेसौं।
अब की बेर आनि सुख दीजै] सूर मिटाय अन्देसौं। " 16

सूरदास के काव्य में प्रेम का स्वरूप:–
प्रेम का अर्थ है– " प्यार] प्रीत सनेह] लाड़] दुलार। " 17

प्रेम को समझाते हुए श्यामसुंदर दास लिखते हैं कि– " वह मनोवृति जिसके अनुसार किसी वस्तु] व्यक्ति आदि के संबंध में यह इच्छा होती है कि वह सदा हमारे पास या हमारे साथ रहें उसकी वृद्धि उन्नति या हित हो अथवा हम उसके योग्य बनें] वह भाव जिसके अनुसार किसी दृष्टि से अच्छा जान पडने वाली किसी चीज या व्यक्ति को देखने] पाने] अपने पास रखने अथवा रक्षित करने की इच्छा हो। " **18**

प्रेम मानव मन की अनुभूति का नाम है। प्रेम का आदि और अंत नहीं है। यह संसार प्रेम की दूरी पर ही खड़ा है। मनुष्य के कल्याण और उन्हें एक सूत्र में बांधने के लिए प्रेम सबसे आवश्यक तत्व है।

सूर के भक्ति मार्ग का केंद्रीय तत्व प्रेम से परिपूर्ण है। सूर जिस प्रेम की बात करते हैं] उसी मानवीय प्रेम को ईश्वरी भक्ति कहते हैं।

सूर के काव्य में प्रेम के स्वरूप का वर्णन कर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि– " प्रेम के सवा लाख गानों का समुद्र एक बार भी उध्देलित नहीं हुआ] कहीं भी निमर्यादा नहीं हुआ इसलिए बिना किसी हिचकिचाहट के जोर देकर कहा जा सकता है कि अपने आप में भरपूर प्रेम सूरदास की लेखनी की करामात है। " **19**

सूरदास के काव्य में गोपिकाओं का श्री कृष्ण के लिए पावन प्रेम अत्यंत कोमल है। ब्रज की गोपियां कृष्ण को अपना जीवन आधार मानती हैं। वह कृष्ण प्रेम पर अपना सर्वस्व न्योछावर करती हैं –

" हम अली गोकुल नाथ आराध्यो।
मन वच क्रम हरि सों धरि पतिव्रत प्रेम योग ता पसाध्यो।
मात पिता हित प्रीत निगम पथ तजि सुख दुख के भ्रम नाख्यो। मनापमान परग
परितोषन सुब्रत थिति मा राख्यो। " 20

कृष्ण के प्रेम में रंगी गोपिकाएं शिकायत करती हुई अपनी माता से कहती हैं कि पहले हमको मना क्यों नहीं किया कि कन्हैया से प्रेम न करो। अब सभी को हमारे प्रेम का पता चल चुका है अब क्या फायदा। सूरदास के प्रेम पद की सुंदर झलक देखिए-

" माई री गोविंद सो प्रीति करत तब ही काहे न हटकी री]
यह तो अब बात फैल गई बई बीज बटकी री। " 21

राधा-कृष्ण के मिलन की सुंदर छवि का महाकवि सूरदास ने बड़ा ही सुंदर चित्रण किया है-

" राधा सकुच श्याम मुख हेरति]
चंद्रावलि देख कै आवति ब्रज ही को प्रिय फेरति। " 22

सूर के पदों में विरह वेदना की कसक किसी को भी आकर्षित कर सकती है। विरह प्रेम की विलक्षण तीव्रता को दर्शाता हुआ उनका पद देखिए-

" कहो तो जो कहिबे की होई]
प्राणनाथ विछुरे की वेदन जानत नाहिन कोई। " 23

मन को छूती हुई राधा की विरह वेदना की कसक सूरदास जी इस प्रकार दर्शाते हैं। मानों वह पुनः सजीव हो उठी हो-

" पिय विनु नागिनि कारी रात।
जो कहू जामिनी उवती जुन्हेया] डसि उल्टी है जात।
जंत्र न फुरत] मंत्र नहि लागत] प्रीति सिरानी जात।
सूर श्याम बिनु विकल बिरहिनी] मुरि मुरि लहरें खाते। " 24

निष्कर्ष : -

हिंदी साहित्य के अनेकों विद्वानों ने सूर के काव्य में भक्ति और सौंदर्य के अद्भुत समन्वय की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। सूर के काव्य में वात्सल्य और प्रेम दोनों का प्रयोग मनमोहक और बेजोड़ है। सूरदास ने जहां वात्सल्य के भाव में मातृ स्नेह और संरक्षण की भावना को दर्शाया है वहीं प्रेम के भाव में समर्पण और विरह की अनुभूति को अपने काव्य में उकेरा है। दोनों भावों में भक्त और भगवान के मधुर संबंधों को मानवीय और भावनात्मक रूप दिया है। यही कारण है कि आज भी सूरदास का काव्य हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति में ही नहीं अपितु विश्व साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

सन्दर्भ सूची

1. 1- शुक्ल, रामचंद्र] हिंदी साहित्य का इतिहास पृष्ठ संख्या- 93
2. 2 वर्मा] डॉ.रामकुमार] हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृष्ठ संख्या- 474
3. 3- वहीं] पृष्ठ संख्या- 474
4. 4-वहीं] पृष्ठ संख्या- 475
5. 5- हिंदी-शब्द-कल्पद्रुम] संपादक पंडित रामनरेश त्रिपाठी] पृष्ठ संख्या- 641
6. 6- भक्ति के आयाम डॉ. पी जयरामन वहीं] पृष्ठ संख्या - 356
7. 7- शुक्ल] रामचंद्र] हिंदी साहित्य का इतिहास पृष्ठ संख्या- 95

8. 8- गुप्त] डॉ.किशोरी लाल] पांच खण्ड में संपूर्ण सूरसागर-1] पृष्ठ संख्या- 193] पद संख्या- 326
9. 9- सूरसागर] सूरदास 10\77
10. 10-गुप्त] डॉ. किशोरी लाल] पांच खण्ड में संपूर्ण सूरसागर-1] पृष्ठ संख्या- 186] पद संख्या- 317
11. 11- वही पृष्ठ संख्या- 223] पद संख्या- 380
12. 12- वही पृष्ठ संख्या- 188,पद संख्या- 319
13. 13- वही पृष्ठ संख्या- 266] पद संख्या- 620
14. 14- वही पृष्ठ संख्या- 234,पद संख्या- 401
15. 15- गुप्त] डॉ.किशोरी लाल] पांच खण्ड में संपूर्ण सूरसागर-2] पृष्ठ संख्या- 189] पद संख्या- 1442
16. 16- वही पृष्ठ संख्या- 190] पद संख्या- 1443
17. 17- हिंदी-शब्द-कल्पद्रुम] संपादक पंडित रामनरेश त्रिपाठी] पृष्ठ संख्या- 538
18. 18- दास] डॉ. श्यामसुंदर हिंदी शब्दसागर] पृष्ठ संख्या- 3244
19. 19- द्विवेदी] हजारीप्रसाद] सूर साहित्य] पृष्ठ संख्या- 86
20. 20- सूरसागर] दशम स्कंध] सूरदास पद- 4148 ना. प्र. स. काशी।
21. 21- सूरदास ग्रंथावली] ना. प्र. स.]काशी] पद- 37
22. 22- सूरसागर] दशम स्कंध] सूरदास] पद- 2776] ना. प्र. स. काशी।
23. 23- सूरसागर] दशम स्कंध] सूरदास] ना. प्र. स. काशी।
24. 24- गुप्त] डॉ.किशोरी लाल] पांच खण्ड में संपूर्ण सूरसागर-2] पृष्ठ संख्या- 103] पद संख्या- 215